

SHRI LAXMAN PAI

Shri Laxman Pai is a contemporary Indian Artist who has passionately pursued visual art influenced by the vocabulary of Indian miniatures, traditional designs, Indian music, landscapes and beautiful beaches of his home town - Goa. He has synthesized pictorial wealth from the past with modern principles to create a novel yet honest contemporary Indian idiom, inspired by India's socio-cultural ethos.

2. Born on 1926, in Margao, Goa, Shri Pai naturally gravitated to fine arts at a very early age. He got his early education as a young 11 year old by coloring BW photographs at his uncle Mauzo's photo studio. Being of rebellious spirit, he took part in Satyagraha against the Portuguese rule in Goa and was beaten and jailed by the authorities. Moving to Mumbai, he completed his art education from the famed J.J. School of Art, where he was awarded the prestigious Mayo medal.

3. Ever hungry for knowledge, Shri Pai went to Paris and met up with his contemporaries - F.N. Souza, Raza, and Gaitonde. He spent fruitful decade in Paris marked by multiple critically appreciated exhibitions which were very well received by art community.

4. Passionate attachment to his motherland promoted Shri Pai to return to India and then further to Goa to head up Goa College of Art (1977 to 1987). He served on the Board of Studies for the painting faculty for Bombay and Goa Universities. He was on the executive board of Lalit Kala Academy and member of the General Council for Lalit Kala Academy and Sangeet Natak Academy.

5. Deeply influenced by teachings of Swami Vivekananda, J. Krishnamurti, and Indian philosophy combined with love of music, especially flute and Sitar, Shri Pai produced series of paintings inspired by Ramayana, Gita-Govinda, Musical moods. He has to his credit more than 110 one-man shows across the globe. His solo exhibitions have been held at New York, San Francisco, London, Paris, Munich, Stuttgart, Hannover, Bremen, Singapore, New Delhi, Mumbai, Panaji and other places. He has also participated in numerous Biennials in Paris, Tokyo, Sao Paulo. His paintings are various public and private collections, including Museum of Modern Art in Paris, New York Public Library, Berlin Museum, Ben and Abbey Grey Foundation (USA), National Gallery of Modern Art in New Delhi, Mumbai, Chennai and Nagpur.

6. Shri Pai is recipient of Lalit Kala National award. He was honored by Govt. of Goa in 1987 with Nehru award and Gomant Vibhushan in 2016. He received Padma Shri award in 1985.



श्री लक्ष्मण पै

श्री लक्ष्मण पै एक आधुनिक भारतीय कलाकार हैं । आपने भारतीय लघु-चित्रों के संग्रह, पारंपरिक चित्रों, भारतीय संगीत, आपने गृह-नगर गोवा के प्राकृतिक दृश्यों तथा खूबसूरत समुद्र-तटों से प्रेरित होकर दृश्य कला का भाव-प्रवणता से अनुसरण किया है। आपने अतीत की चित्रात्मक संपदा का आधुनिक सिद्धांतों के साथ समन्वय करके एक नवीन किंतु उचित आधुनिक भारतीय शैली का निर्माण किया जो कि भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक लोकाचार से प्रेरित है।

2. आपका जन्म 1926 में मडगांव, गोवा में हुआ था। आप बहुत कम अवस्था में ही ललित कला की ओर सहज रूप से आकर्षित हो गए थे। महज 11 वर्ष की आयु में आपके अंकल मौजो के फोटो स्टूडियो में श्याम-श्वेत फोटोग्राफों को रंगीन करके आपकी प्रारंभिक शिक्षा आरंभ हुई। विद्रोही प्रवृत्ति के होने के कारण आपने गोवा में पुर्तगाली शासन के खिलाफ सत्याग्रह में भाग लिया तथा आपको प्राधिकारियों द्वारा प्रताड़ित किया गया तथा जेल में डाला गया। मुम्बई आकर आपने बहु प्रसिद्ध जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट से अपनी कला शिक्षा पूरी की जहां आपको प्रतिष्ठित मायो मेडल से पुरस्कृत किया गया।

3. ज्ञान की नित्य लालसा आपको पेरिस ले गई जहां आप अपने समकालीन-एफ.एन. सोजा, रज़ा तथा गायतोण्डे से मिले। आपने पेरिस में एक उमदा दशक बिताया जहां आपकी समीक्षात्मक रूप से सराही गई कई प्रख्यात प्रदर्शनियां लगी जिसे कला समुदाय द्वारा सहर्ष अंगीकार किया गया।

4. मातृ भूमि के प्रति आपका भावनात्मक प्रेम आपको भारत वापस लाया जहां आप गोवा जाकर गोवा कॉलेज ऑफ आर्ट (1977 से 1987) के प्रमुख रहे। आपने मुम्बई तथा गोवा विश्वविद्यालयों के चित्रकला संकाय के लिए पाठ्यक्रम समिति में भी कार्य किया। आप ललित कला अकादमी की कार्यकारी समिति में भी रहे तथा ललित कला अकादमी और संगीत नाटक अकादमी की सामान्य परिषद के सदस्य रहे।

5. स्वामी विवेकानंद, जे. कृष्णामूर्ति और भारतीय दार्शनिकों के उपदेशों से अत्यधिक प्रभावित होने के साथ साथ संगीत के लिए खास तौर से बांसुरी तथा सितार के लिए आपके प्यार के चलते, आपने रामायण, गीत-गोविंद, संगीतमय चित्तवृत्ति से प्रभावित होकर कलाकृतियों की श्रृंखला का निर्माण किया। विश्व भर में आपने 110 से अधिक एकल (one man) शो किए हैं। न्यूयार्क, सेन फ्रांसिसको, लदंन, पेरिस, म्यूनिख, स्तुतगार्ट, हैनोवर, ब्रेमेन, सिंगापुर, नई दिल्ली, मुम्बई, पणजी तथा अन्य स्थानों पर आपकी एकल प्रदर्शनियां लगीं। आपने पेरिस, टोकियो, साउ पाउलो में कई द्विवार्षिक प्रदर्शनयिों में भी भाग लिया। आपकी चित्रकलाओं के कई सार्वजनिक तथा निजी संग्रह हैं जिसमें पेरिस में म्यूजियम ऑफ मार्डन आर्ट, न्यूयार्क पब्लिक लाइब्रेरी, बर्लिन संग्रहालय, बेन एंड एवं ग्रेफाउंडेशन (अमेरिका), नई दिल्ली, मुम्बई, चैन्ने तथा नागपुर में राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय शामिल है।

6. आपको ललित कला राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। आपको वर्ष 1987 में नेहरू पुरस्कार तथा वर्ष 2016 में गोमंत विभूषण से गोवा सरकार द्वारा सम्मानित किया गया। आपको वर्ष 1985 में पद्म श्री पुरस्कार प्रदान किया गया है।